फोटो– पुरुषोत्तम

कहानियों द्वारा अधिगम की क्षतिपूर्ति है संभव

– वर्तुल ढ़ौंडियाल

कहानियां बच्चों के जीवन का अभिन्न अंग हैं। बच्चे स्कूल जाने से पहले ही घर– समाज में रहकर किस्से कहानियां सुनते हैं। यहां तक कि टीवी में वे जिन कार्टून, नाटक, विज्ञापनों को देखकर खुश होते हैं दरअसल उन सब में भी वे कहानियां ढूंढ लेते हैं और अगर उनसे इन सब पर चर्चा की जाये तो वे आपको उसकी कहानी सुना सकते हैं। कहानियों को बहुत पुराने ज़माने से शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है जिसके सैकड़ों उदाहरण गिनाये जा सकते हैं जैसे जातक कथाएं, पंचतंत्र, ईसप की कहानियां, धर्म ग्रंथों की कहानियां, अरेबियन नाइट्स आदि।

यही वजह है कि स्कूल के पाठ्यक्रम में भी कहानियों को बखूबी शामिल किया गया है और न केवल भाषा की पुस्तकों में बल्कि अन्य विषयों में भी कहानी और कविताओं का उपयोग किया जाता है। कहानी आनंद प्राप्ति के साथ–साथ अन्य विषयों खासकर भाषाई कौशल अर्जित करने का एक बहुत ही सशक्त माध्यम है। मौखिक/लिखित कहानियाँ साक्षरता समेत भाषा की अन्य सभी दक्षताओं को सीखने–सिखाने का रोचक साधन है जिसमें भाषा सीख रहे बच्चों को पता ही नहीं चलता कि एक मजेदार कहानी सुनने, उसके घटनाक्रम के तिलिस्म और पात्रों के विविध पक्षों को महसूस करने के बीच उन्होंने कितना कुछ सीख लिया है। वे पात्रों के जीवन, उनकी चुनौतियों और आनंद को महसूस करने लगते हैं।

जब कोई शिक्षक कहानी को उनके जीवन के अनुभवों और उनके परिवेश से जोड़ता है तो अनायास ही ये कहानियां सामाजिक ताने–बाने, रीतियों–कुरीतियों, सही–गलत के बोध, विश्वास–अंधविश्वास आदि के महीन अंतर को परखने और महसूस करने के लिए विवश करती हैं। अगर ऐसे में शिक्षक बच्चों को खुलकर अपने विचार व्यक्त करने और कहानियों के साथ अपने जीवन के वास्तविक अनुभव या मानसिक परिकल्पना को जोड़ने के मौके उपलब्ध कराते हैं तो बच्चे उच्च भाषाई कौशल

जैसे प्रश्न करना, समालोचना करना, समीक्षा करना, तर्क करना आदि सहज रूप से सीख जाते हैं।

भाषा सीखने के मायने मात्र वर्ण/मात्रा की ठीक पहचान, शुद्ध वर्तनी, वाक्य लिखना, व्याकरण सीखना, पाठ के प्रश्नों के जवाब देना जैसी साक्षरता की दक्षताएं सीख लेना भर कतई नहीं है, हालांकि यह भी भाषा सीखने के महत्वपूर्ण अव्यय हैं। मगर भाषा के वृहद् उद्देश्य मात्र संकेतों–ध्वनियों के अंतर और व्याकरण के नियमों तक सीमित नहीं हैं। भाषा सोचने समझने, विचारों को व्यवस्थित करके मौखिक और लिखित रूप में साझा करने, सामाजिक ताने–बाने को समझने और उसके साथ सामंजस्य बैठाने, प्रचलित मान्यताओं को परखने और नई मान्यताएं गढ़ने, रचनात्मक और सृजनात्मक अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा जानने का मतलब है कि हम उसका इन उद्देश्यों के लिए भाषा का सटीक और प्रभावशाली उपयोग कर सकें। इसके लिए यह आवश्यक है कि भाषा के शिक्षक भाषा के इन वृहद उद्देश्यों को समझें और उन पर बच्चों के साथ रोचक ढंग से शिक्षण करने के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों का उपयोग करें।

बच्चे स्कूल आने से पूर्व ही मौखिक भाषा से न केवल परिचित होते हैं बल्कि वे इस भाषा का बहुत ही प्रभावशाली रूप से विविध उद्देश्यों के लिए प्रयोग भी कर पाते हैं। वे व्याकरण के नियमों को रटे बिना अपनी भाषा के व्याकरण का सही इस्तेमाल करते हुए वाक्य विन्यास गढ़ते हैं और उनके वाक्यों में संगतता भी होती है। वे जब कहानियों को अपने शब्दों में सुनाते हैं तो वे लिखित कहानी के वाक्य विन्यास की हू–ब–हू नक़ल नहीं करते बल्कि अपनी मौखिक भाषा के अनुरूप नए वाक्य गढ़कर पूरी कहानी को सुना पाते हैं। इस बात से हमें यह पता चलता है कि भाषा शिक्षण में यह बात बहुत ही गौण है कि बच्चे किताब में लिखी भाषा को रटकर उसकी हू–ब–हू नक़ल करें बल्कि भाषा शिक्षण में यह अति आवश्यक बात है कि बच्चे पढ़े या सुने जा रहे को समझ कर उसमें अपने विचार/भाव जोड़कर उसे अपनी भाषा में अभिव्यक्त करें।

लगभग दो वर्षों तक बच्चों का स्कूल में नियमित सीखना बाधित रहा। इसके कारण बच्चों में न केवल शैक्षिक हानि हुई बल्कि कोविड के कारण समाज में उत्पन्न भयावह स्थिति ने बच्चों के भावनात्मक, शारीरिक और मानसिक पक्ष को भी बहुत तरह से प्रभावित किया है। ऐसे में कक्षा में मजेदार कहानियों और बच्चों को कहानी से जुड़ी रोचक गतिविधियों को शिक्षण का आधार बनाना हमें इस स्थिति से उबरने में मदद कर सकता है।

कहानी पर काम करने के लिए क्या आवश्यक है ?

कहानी शिक्षण का बहुत प्रभावशाली औजार है मगर ठीक से योजना न होने के कारण यह उतना प्रभावी साबित नहीं होगी। किसी भी कहानी पर कार्य करने से पहले शिक्षकों को यह योजना कर लेनी चाहिए कि इस कहानी के माध्यम से वे बच्चों की किन–किन दक्षताओं (सीखने के प्रतिफलों) और किन नयी अवधारणाओं पर कार्य करना चाहते हैं। कहानी को कक्षा में रोचक ढंग से सुनाना, उस पर चर्चा करना और बच्चों को उस कहानी से जोड़ने के लिए तरह–तरह की स्तर अनुरूप गतिविधियां करना इस प्रक्रिया का हिस्सा होना ही चाहिए। इस प्रक्रिया में निम्न बातों का ध्यान रखना मददगार साबित होता है।

किताबों/ कहानी का चयन– सबसे पहले तो यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चों की उम्र/कक्षा या उनके पढ़कर समझने के स्तर के अनुरूप कहानियों का चयन किया जाए। कभी शिक्षक विशेष उद्देश्य जैसे किसी अवधारणा विशेष को समझाने के लिए या शुरुआती पाठकों के पढ़ने–लिखने के अभ्यास को ध्यान में रखी गयी किताबें जैसे बरखा सीरीज, मीना आदि का चयन कर सकते हैं।

स्तर के अनुरूप गतिविधियां– शिक्षक बच्चों के स्तर के अनुरूप गतिविधियों का निर्धारण कर सकते हैं जिससे बच्चों को पढ़ना–लिखना सीखने, टेक्स्ट पर समझ बनाने और अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में मदद मिले। उदाहरण के लिए किसी कहानी पर कार्य करने की कुछ सरल गतिविधियां इस प्रकार हो सकती हैं।

कहानी पढ़ने/सुनाने से पूर्व चर्चा– शिक्षक कहानी सुनाने से पूर्व कहानी के शीर्षक, उसके पात्रों और चित्रों पर चर्चा करें और बच्चों के पूर्वज्ञान से जोड़ें। ऐसा करने से बच्चे कहानी में क्या होने वाला है, कहानी में कौन–कौन पात्र हैं आदि के बारे में अनुमान लगाने के लिए अपने पूर्वज्ञान का उपयोग करते हैं और सक्रिय

श्रोता या पाठक की भूमिका अपनाते हैं।

कहानी सुनाना– कहानी को रोचक ढंग से आवाज़ के उचित उतार–चढ़ाव और हाव–भाव से कहानी सुनाये जाने से बच्चे बहुत आनंदित होते हैं और वे प्रभावशाली मौखिक अभिव्यक्ति की बारीकियों को सीखते हैं। शिक्षक कहानी सुनाने के कई तरीके उपयोग कर सकते हैं जैसे मुखौटों, कठपुतलियों, अन्य वस्तुओं का उपयोग करते हुए कहानी कहना आदि।

पढ़ना सीख रहे बच्चों के साथ सस्वर वाचन– शिक्षक अंगुली रखकर पढ़े जा रहे टेक्स्ट को बच्चों को प्रदर्शित करते जाते हैं। बच्चे पढ़े जा रहे शब्दों पर उंगली चलाते हुए दोहराते हैं और लिखित शब्दों को उनकी ध्वनि से मिलान करते हैं। ऐसा करने से बच्चों में ध्वनि जागरूकता पैदा होती है और वे धीरे–धीरे शब्दों और वर्णों को न केवल पहचान पाते हैं बल्कि उनकी ध्वनियों को अलग–अलग शब्दों में चिह्नित कर पाते हैं और नए शब्द बनाने में उनका उपयोग करने लगते हैं।

शब्द/वर्ण पहचान के खेल– पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया को और सहज बनाने और वर्ण पहचान के बोझिल रटने वाले काम से बचने के लिए बहुत से शब्द खेल खेले जा सकते हैं जैसे सुने गए शब्द को पाठ में ढूंढना, किसी वर्ण को अलग–अलग शब्दों में पहचानना, शब्द अन्ताक्षरी, तुकबंदी करना आदि।

उच्च भाषाई कौशलों पर कार्य– इसी तरह शिक्षक बच्चों के साथ कहानी पर बोधगामी दक्षताओं और कहानी के विशिष्ट उद्देश्य (जिन्हें किसी कहानी विशेष द्वारा सिखाया जा सकता हैं जैसे रंगों की पहचान, परिवेश, मूल्य जैसे दोस्ती, धर्मनिरपेक्षता, तार्किक चिंतन आदि) पर कार्य कर सकते हैं और बहुत सी रोचक गतिविधियाँ कर सकते हैं जैसे कहानी के पात्र बनकर कहानी सुनाना, कहानी पर नाटक करना, कहानी को आगे बढ़ाना या अंत बदलना, कहानी के पात्रों को लेकर एक अलग कहानी बनाना, शब्द दिए जाने पर उनसे कविता/कहानी तैयार करना आदि। इन सब गतिविधियों से बच्चों के भावनात्मक पक्ष, विचार करने की क्षमता और रचनात्मकता में बढ़ोत्तरी होती है।

आकलन– कक्षा में जो भी गतिविधि की जाती है वह शिक्षक द्वारा किन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया गया सायास प्रयास है। गतिविधि करने के दौरान शिक्षक यह अवलोकन करें कि क्या बच्चों को इस गतिविधि में आनंद और रुचि मिल रही है? क्या बच्चे उन उद्देश्यों को सीख रहे हैं जिनके लिए यह गतिविधि की जा रही है? शिक्षक अवलोकन करें कि प्रत्येक बच्चे की प्रतिभागिता कैसी है। गतिविधि करने के बाद चर्चा या अन्य कार्य जैसे प्रोजेक्ट, स्वयं से लिखना, समूह में प्रस्तुति करना आदि के द्वारा भी यह जांचा जाना चाहिए कि जिन उद्देश्यों के लिए यह गतिविधि की गयी थी उन उद्देश्यों को किस हद तक प्राप्त कर पाए हैं।

आज के सन्दर्भ में कक्षा में कहानी का महत्त्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि हाल ही में कोविड महामारी के कारण लम्बे अरसे से बंद स्कूल अब खुलने लगे हैं। लगभग दो वर्ष से बच्चों का स्कूल में नियमित सीखना बाधित रहा। इसके कारण बच्चों में न केवल शैक्षिक हानि हुई बल्कि कोविड के कारण समाज में उत्पन्न भयावह स्थिति ने बच्चों के भावनात्मक, शारीरिक और मानसिक पक्ष को भी बहुत तरह से प्रभावित किया है। ऐसे में कक्षा में मज़ेदार कहानियों और बच्चों को कहानी से जुड़ी रोचक गतिविधियों को शिक्षण का आधार बनाना हमें इस स्थिति से उबरने में मदद कर सकता है। इन्हीं सब बिन्दुओं को ध्यान में रख कर भारत सरकार देश के सभी विद्यालयों में रीडिंग कैम्पेन चलाने की पैरवी कर रही है और विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता मंत्रालय के द्वारा जारी दिशा–निर्देश इस बात की पैरवी करते हैं कि विद्यालयों में बच्चों के स्तर और रुचि के अनुरूप पठन सामग्री, पढ़ने के लिए निर्धारित समय और कहानी/कविता सुनने सुनाने और उन पर व्यवस्थित कार्य करने के लिए अभियान चलाया जाए। इस कार्यक्रम का उद्देश्य है कि बच्चे ढेर सारी अलग–अलग कहानियों का आनन्द लें, उनसे जुड़ी गतिविधियों में प्रतिभाग करें और न सिर्फ भूली हुई भाषाई दक्षताओं को पुनः हासिल करें बल्कि अपनी वर्तमान कक्षा के पाठ्यक्रम के लिए भी तैयार हो सकें।

इस कार्य को एक अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए जहां शिक्षक कक्षा में बहुत सी मौखिक कहानियों को सुने सुनाएं, बच्चों से घर से कहानियां सुनकर आने को कहें और इन सब सुनी–सुनाई कहानियों को भाषा शिक्षण के औजार के रूप में उपयोग करें। यह बहुत आवश्यक है कि इस दौरान शिक्षकों द्वारा किये गए अभिनव प्रयोग, अपनाई गयी शिक्षण प्रक्रिया केवल 14 सप्ताह तक सीमित न रहे बल्कि दैनिक शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बने।
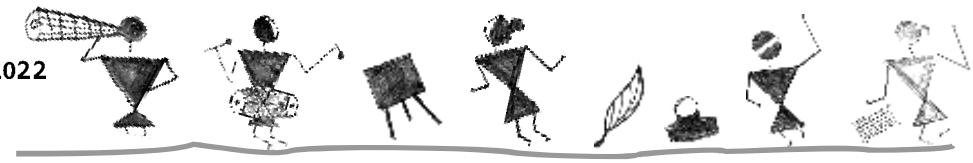
(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन देहरादून, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)